LITTLE STORYBOOK से बनी

आशा और जय की पाँच दिन की दिवाली



पाँच नन्हे दीये

ठनक! नानी ने दरवाज़े के पास की नीची ताक पर पीतल की थाली रखी। उसमें मिट्टी के पाँच छोटे दीये कतार से रखे थे। नानी बोलीं, “हमारे घर में दिवाली पाँच दिन तक आती है—हर दिन एक दीया।” जय ने गोल-गोल आँखों से पूछा, “पाँच दिन वाली दिवाली?”





धनतेरस की सफ़ाई

पहले दिन धनतेरस था। सबने मिलकर घर चमकाया। झाड़ू सर्र-सर्र, पोछा छप-छप। फिर नानी नया चमचमाता स्टील का बर्तन लाईं। जय ने उसमें अपना चेहरा देखा, गाल फुलाए, आँखें टेढ़ी कीं—और खुद ही हँस पड़ा।

littlestorybook.ai

पहला दीया

शाम हुई तो नानी ने पहला दीया जलाया। बच्चे ज़रा पीछे खड़े होकर लौ को देखते रहे। दरवाज़े के पास छोटा-सा उजाला टिमटिमाया। आशा मुस्कुराई, “एक दीया जल गया, अभी चार बाकी!”





छोटी दिवाली की रंगोली

दूसरे दिन छोटी दिवाली थी। आशा और मेई ने सामने की सीढ़ी के पास पंखुड़ियों और रंगों से रंगोली सजाई। जय भी पास बैठा, पर गुलाबी रंग उसकी नाक पर चढ़ गया। “अच्छीं!” छींक आई, और सब खिलखिला उठे।

लक्ष्मी पूजा की रात

तीसरी रात घर और भी जगमगा उठा। सबने नए कपड़े पहने। नानी ने खिड़कियों में दीये जलाए और फूलों के साथ लक्ष्मी पूजा की। आशा ने बहुत धीरे कहा, “हमारे घर, परिवार और दोस्तों के लिए शुक्रिया।”





littlestorybook.ai

मिठाई और दूर की रोशनी

पूजा के बाद मिठाइयों की बारी आई—गोल लड्डू, चिपचिपी जलेबी। दूर आसमान में पटाखों की रोशनी चमक रही थी। लड्डू कुत्ता आशा की गोद में दुबक गया, और सबने खिड़की से झिलमिल देखते-देखते मिठाई खाई।

खाने का पहाड़

चौथे दिन गोवर्धन पूजा हुई। नानी और पड़ोसियों ने मिलकर बाँटने के लिए खाने का छोटा पहाड़ बनाया। नानी बोलीं, “कृष्ण ने एक बार लोगों को बारिश से बचाने के लिए पहाड़ उठा लिया था। आज हम उसी याद में खाने का पहाड़ बनाते हैं।”





littlestorybook.ai

भाई दूज का टीका

पाँचवें दिन भाई दूज था। आशा ने जय के माथे पर छोटा लाल टीका लगाया और उसे लड्डू दिया। जय ने भी आशा को तोहफ़ा दिया—अपनी बनाई हुई तस्वीर, जिसमें उनकी सितारा लालटेन खूब चमक रही थी।

आज हमारी बहन

मेई चुपचाप देखती रही। फिर बोली, “मेरे तो कोई भाई-बहन नहीं हैं।” आशा ने उसका हाथ पकड़ लिया। “तो आज तुम हमारी बहन हो।” मेई को भी लाल टीका मिला, लड्डू मिला, और तीनों ने कहा, “हम एक-दूसरे का ध्यान रखेंगे।”





littlestorybook.ai

पाँचों दीये साथ-साथ

रात को नानी ने पाँचवाँ दीया जलाया। अब पीतल की थाली में पाँचों दीये साथ-साथ जगमगा रहे थे। नानी ने पूछा, “सबसे प्यारा दिन कौन-सा था?” जय ने माथा सिकोड़कर खूब सोचा, फिर बोला, “पाँचों!”

समाप्त

अपने बच्चे को इस कहानी में लाइए

मुफ़्त में आज़माइए। कोड स्कैन कीजिए या यहाँ जाइए

littlestorybook.ai/stories/hi/आशा-और-जय-की-पाँच-दिन-की-दिवाली

LITTLE STORYBOOK
littlestorybook.ai